दिनांक 14 प्रगस्त, 1984

सं जो वि /सोनीपत/186-84/30654.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. सुप्रीम इण्डिया, दीपाल पुर रोड, बहालगढ़ (सोनीपत) के श्रीमक श्री राम कृष्ण तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपद्यारा (3) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32572, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए-श्रो (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिन्यम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामल है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राम कृष्ण की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि /अम्बाला / 168-84 / 30661 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. जे के फूड जैन गन्ज, पुरानी श्रनाज मण्डी, श्रम्बाला शहर के श्रमिक श्री जीत राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब, ग्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (ग) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. (44) 84-3-श्रम, दिनांक 19 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसँगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री जीत राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो किस राहत का हकदार है ?

स. स्रो वि./जी.जी.एन./96-84/30667.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. सूशील इन्जीनियरिंग वर्क स गुड़गांवा के श्रीमिक श्री कमरुदीन तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रंब ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415 3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 मई, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री कमरुदीन की सेवरेशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि./सोनीपत/191-84/30674. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि म. महेश बुड प्रोडक्टस, प्रा. लि., खेवड़ा रोड़, बहालगढ़ (सोनीपत) के श्रमिक श्री बालक राम तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यवाल इस के द्वारा सरकारी अभिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864 ए-ग्रो (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा ज्वत अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सम्बधित या उससे सुसंगत नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

वना श्री वालक राम की सेनाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रोवि |यमुना | 24-84 | 30681 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि 1 सचिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चग्डी 13, 2. कार्यकारी ग्रीभवन्ता, सब ग्रर्बन डिविजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, जगाधरी के श्रीमक श्री राम स्वरूप तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ? .

इस लिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्वाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामजा न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है :—

वया श्री राम स्वरूप की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 28 ग्रगस्त, 1984

सं ग्रो.वि./एक डो./45-84/31856 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं एस. जी. स्टीहज, प्रा० लि., प्लाट नं० 6, सैक्टर—4, वल्लवगढ़, कें श्रमिक श्री घुरभारी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी.श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिन यम की घारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के-जीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

न्या श्री घुरभारी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. श्रो. वि./एफ.डी./45-84/31863.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं • एस • जो • स्टील्ज, प्रा॰ लि॰, प्लाट नं० 6, सैक्टर-4, बल्लबगढ़, के श्रमिक श्री वलबीर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यनाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं

इसलिए, अब, ब्रीद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1953 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के ब्रधीन गठित अस न्यायालय, फरीद(बाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्यायालिणंय के लिये निद्युट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभि ह के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बलबीर सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?